REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 6 | MARCH - 2021

# कौशल विकास एवं स्वरोजगार निर्माण में ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान कोरबा का योगदान

गजाला रशीद
शोधार्थी,
वाणिज्य विभाग, आई. एस. बी. एम. विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

डॉ. ममता नायक
ऐसोशिएट प्रोफेसर,
वाणिज्य विभाग, आई. एस. बी. एम. विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

**सारांश –**

संस्था द्वारा जिले के ऐसे बेरोजगार युवक युवतियों को जो बी. पी.एल एवं ए.पी एल की सूची में आते है उन्हे रोजगार देने के लिए उनको कौशल में विकास किया जाता है एवं स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में कोरबा जिले के ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्था का चुनाव किया है। इस संस्था में 608 प्रशिक्षार्थी वर्तमान में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है। उनमें से अलग–अलग कार्यक्रमों के 100 प्रशिक्षार्थी का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में यह देखा गया कि कोरबा ग्रामीण प्रधान जिला है जहाँ अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास कर रही एवं यहाँ रोजगार की कमी के कारण वे शहरों की ओर पलापन कर रहे है। केन्द्र सरकार की योजना ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण स्थापना पश्चात युवाओं का ओर पलायन में कमी आई है। इस संस्था के माध्यम से ग्रामीण युवा जो अपने कौशल में विकास करना चाह रहे थे या जो अपना स्वंय के रोजगार की स्थापना करना चाह रहे थे वे युवा एवं युवति यहां अनेक प्रशिक्षक कार्यक्रम के माध्यम से अपने कौशल में बढ़ोत्तरी कर रहे है।

**प्रस्तावना –**

ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार ने अपने सभी बैंको को सूचित किया है कि वे अपने प्रत्येक अग्रणी जिले मे ऐसे ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना करे जिसका प्रमुख उद्देश्य ऐसे ग्रामीण बेरोजगार युवा जो बी.पी.एल. सूची मे आते हैं उन्हे रोजगार दिलाने के लिये कार्य करे इसके लिये प्रत्येक जिले मे रूरल डवलपमेन्ट एंड सेल्फ एम्पलायमेन्ट ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट आर एस ई टी आई की स्थापना की है जिसमे भारत सरकार और जिले के अग्रणी बैंक के सहयोग से यह योजना चलाई जाती है। 1982 मे धर्मस्थल मंजूनाथेस्वरा एजुकेशन ट्रस्ट सिंडिकेट बैंक और केनरा बैंक द्वारा संयुक्त रूप से एक नई पहल की कोशिश की गई थी। इसका प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है – ग्रामीण विकास मंत्रालय आरसेटी, ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा नीतिगत पहल और की भूमिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय मॉडल से प्रभावित है और 2010 मे बैंको को ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान के रूप मे ज्ञात अपने सभी लीड जिलों मे एक प्रकार का संस्थान स्थापित करने

की सलाह दी।, आरसेटी एक वैकल्पिक कैरियर और आजीविका के स्त्रोत के रूप मे स्वरोजगार लेने के लिए ग्रामीण युवाओ की पहचान, उन्मुख प्रशिक्षित और सहायता करेगा।

## ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान कोरबा का परिचय

ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान कोरबा की स्थापना 15 अगस्त 2009 को कोरबा जिला में भारतीय स्टेट बैंक द्वारा प्रारंभ किया गया है। वर्तमान में यह संस्थन पुराना परिवहन कार्यालय से स्थानान्तरित होकर अपने नवनिर्मित भवन तहसील कार्यालय व पंजीयन कार्यालय के पास स्थित है। उक्त संस्थान नये बस स्टैण्ड से 6 कि.मी व रेलवे स्टेशन से 10 कि.मी की दूरी पर स्थित है। संस्थान का कार्यक्षेत्र पांच तहसील सहितर (कोरबा, करतला, कटघोरा, पोडीउपरोडा, पाली,) संपूर्ण जिला है। संस्था द्वारा जिले के ऐसे बेरोजगार युवक युवतियों को जो बी.पी.एल एवं ए.पी एल की सूची में आते है उन्हे रोजगार देने के लिए उनको कौशल में विकास किया जाता है एवं स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। यहां युवक युवतियों कृशको महिला सहायता समूहों को कौशल उन्नयन के लिए प्रशिक्षित कर उनके व्यक्तित्व का विकास एवं स्वरोजगार स्थापना में सहयोग प्रदान करना है।

## अध्ययन का क्षेत्र –

शोधार्थी ने कोरबा जिले के ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्था का चुनाव किया है। इस संस्था में 608 प्रशिक्षार्थी वर्तमान में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है। उनमें से अलग–अलग कार्यक्रमों के 100 प्रशिक्षार्थी का चयन किया गया है।

## अध्ययन की समस्या–

ग्रामीण क्षेत्र में गरीबी एवं अशिक्षा के कारण लोग जागरूक नहीं हैं कि सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनाओं का कियान्यन किया जाता है इस शीर्षक को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने अध्ययन को पूर्ण करने के लिये ''कौशल विकास एवं स्वरोजगार में ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्था को कोरबा का योगदान ''

## अध्ययन का उद्देश्य

शोध के उद्देश्य व सिद्धांत व्यवहारिक होते है। सिद्धांत, उद्देश्य में, सिद्धांत ज्ञान संकलन में, भविष्यवाणी अवधारण का विकास शामिल होता है। शोध में नवीन सिद्धांतों को परिवर्तनशील समाज के लिए नई परिस्थितियों के अनुरूप प्रतिपादित किया जाता है। प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नांकित है –

- ग्रामीण गरीब युवाओं को स्वरोजगार के लिए एवं प्रशिक्षण हेतु ग्रामीण स्वरोजगार संस्थान की भूमिका का अध्ययन करना।
- ग्रामीण क्षेत्र के बीपीएल श्रेणी के युवाओं मे उद्यमशीलता की क्षमता के विकास से ग्रामीण स्वरोजगार संस्थान का अध्ययन करना।
- ग्रामीण क्षेत्र के बी.पी.एल. एवं ए.पी.एल. श्रेणी के महिलाओ के रोजगार एवं उद्यमिता विकास हेतु उपलब्ध सुविधाओं का विश्लेषण करना।
- प्रशिक्षण उपरान्त स्वरोजगार प्रारंभ करने हेतु प्राप्त सुविधाओं का अध्ययन करना।

## अध्ययन की परिकल्पना

- ग्रामीण रोजगार प्रशिक्षण संस्था कोरबा का ग्रामीण युवक एवं युवतिओं को स्वरोजगार प्रारंभ करने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है।
- ग्रामीण क्षेत्र के गरीब महिलाओं में कौशल विकास कर स्वरोजगार स्थापित करने मे महत्वपूर्ण भूमिका रही है।
- ग्रामीण क्षेत्र के युवको में कौशल का विकास हुआ है।
- इस संस्था के माध्यम से ग्रामीणों के जागरूकता में वृद्धि हुई।

## अध्ययन की सीमाएँ

किसी की शोध कार्य को करने के लिए अध्ययन की सीमाएँ निर्धारित करनी चाहिए जिससे अध्ययन को करने के लिए सुविधाँ हो एवं उसका उचित परिणाम आ सके कोराबा जिले के ग्रामीण स्वरोजगार संस्था के प्रशिक्षणार्थी का अध्ययन शोधार्थी ने निम्नलिखित बिन्दुओं पर अपना अध्ययन समिति किया है।

1. **जागरूकता**– हितग्राहियों की अधिक संख्या के कारण केवल जागरूक प्रशिक्षार्थी को लिया गया है।
2. **प्राथमिक एवं द्वितीयक डाटा** – शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको पर आधारित है।
3. **क्षेत्र** – इस अध्ययन के लिये कोरबा ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान कोरबा को लिया गया है।
4. **समय प्रबंधन**– समय व धन की कमी होने के वजह से शोध अध्ययन को समित रखा गया है।
5. **आंकड़ों का पुश्टिकरण**– आंकड़ों के पुष्टिकरण के लिए बहुत सारे तकनीक होते है जिसमें शोधकर्ता द्वारा कुछ सीमित तकनीक का ही उपयोग किये है।

## अध्ययन की जनसंख्या –

ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान कोरबा में 2010 से लेकर 2020 तक कुल 3263 हितग्राही प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके है इनसे अलग–अलग प्रशिक्षण कार्यक्रमों में से संबधित आकड़ों को अपनी सुविधा के अनुसार चयन किया गया है। जो प्रशिक्षण प्राप्त हितग्राही एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है। उन्हें लगे जिसमें से 18 से 45 तक के युवा शामिल है।

## आंकड़ों का संकलन

आकड़े निम्नलिखित विधियों से एकत्रित किए जाते है –

1. प्राथमिक स्त्रोत
2. द्वितीयक स्त्रोत

## प्राथमिक स्त्रोत :–

जो आंकड़े प्रथम बार व्यक्तिगत रूप से अथवा व्यक्तियों के समूह संस्था संगठन द्वारा एकत्रित किए जाते है, प्राथमिक स्त्रोत कहलाते है। प्राथमिक आंकड़ों का संग्रहण उसे हेतु एक सूचना अनुसूची नमूना तैयार किया। इसके विषय में संबधित प्रश्न जैसे– आप इस संस्था के प्रशिक्षण से संतुष्ट है स्वरोजगार की प्राप्ति हुई या नहीं कौशल में विकास हुआ की नहीं इस प्रकार के प्रश्नों अनुसूची तैयार किया गया।

**द्वितीयक आंकड़े –** वे आंकड़े जो पूर्व में हुए शोध, लेखों, पुस्तकों आदि के माध्यम से एकत्रित किये जाते है। जैसे–प्रकाशित स्त्रोत।

## आंकड़ों का सारणीयन एवं वर्गीकरण

प्राथमिक एवं द्वितीयक साधानों द्वारा एकत्र किये गए आंकड़ों को सारणी विश्लेशण एवं व्याख्या करने के पश्चात् निष्कर्ष प्राप्त किये गए है। इसके लिऐ आवश्यक सांख्यिकीय विधियों का उपयोग कर समस्या का समाधान निकाला गया है।

## प्राथमिक स्त्रोत से प्राप्त आंकड़े

1. इस संस्था मे आपको प्रशिक्षण की पर्याप्त सुविधाएँ प्राप्त हुई।

**सारणी क्र.–4.1**
**प्रशिक्षण की पर्याप्त सुविधा**

| हितग्राही | हां | नही | कुल |
|---|---|---|---|
| 100 | 95 | 5 | 100 |

**रेखाचित्र कमांक–4.1**
**प्रशिक्षण की पर्याप्त सुविधा**

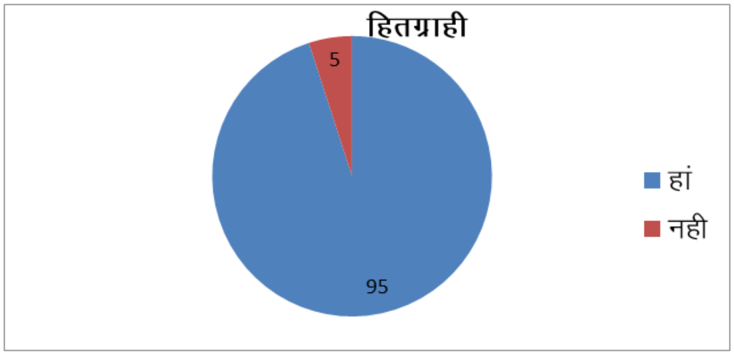


**विवेचना –**

उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ के अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 100 हितग्राही मे से 95 प्रतिशत हितग्राही संतुष्ट हुए एवं 5 प्रतिशत हितग्राही संतुष्ट नही हुए। अतः इस शिक्षण संस्थान मे सुविधाएँ पर्याप्त है।

**2 आपके प्रशिक्षण कार्यकम के अनुसार आपको साधन उपलब्ध कराये जाते है।**

**सारणी क्र.–4.2**
**समुचित साधन की उपलब्धता**

| हितग्राही | हां | नही | कुल |
|---|---|---|---|
| 100 | 85 | 15 | 100 |

**रेखाचित्र कमांक–4.2**
**समुचित साधन की उपलब्धता**

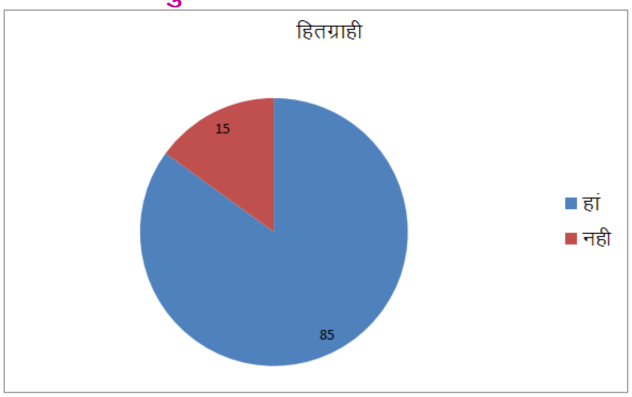


**विवेचना–**

उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ के अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 100 हितग्राही मे से 85 प्रतिशत हितग्राही साधन से संतुष्ट हुए एवं 15 प्रतिशत हितग्राही संतुष्ट नही हुए। अतः इस शिक्षण संस्थान मे समुचित साधन उपलब्ध कराये जाते है।

### 3. आपके प्रशिक्षण कार्यक्रम के अनुसार आपके साधन आधुनिक है।

**सारणी क्र. – 4.3**
**आधुनिक साधन की उपलब्धता**

| हितग्राही | हां | नही | कुल |
|---|---|---|---|
| 100 | 90 | 10 | 100 |

**रेखाचित्र कमांक–4.3**
**आधुनिक साधन की उपलब्धता**

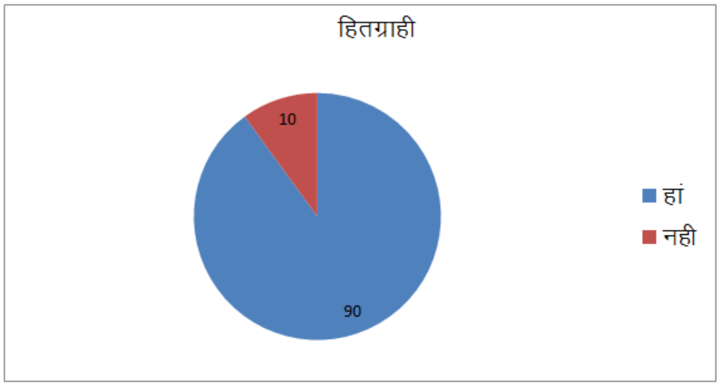


**विवेचना –**

उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ के अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 100 हितग्राही मे से 90 प्रतिशत हितग्राही के पास पर्याप्त साधन है एवं 10 प्रतिशत हितग्राही के पास पर्याप्त साधन नही है। अतः इस शिक्षण संस्थान मे समुचित साधन उपलब्ध कराये जाते है।

### 4. आपके प्रशिक्षण के लिए योग्य प्रशिक्षक उपलब्ध है।

**सारणी क्र. – 4.4**
**योग्य प्रशिक्षक उपलब्ध**

| हितग्राही | हां | नही | कुल |
|---|---|---|---|
| 100 | 87 | 13 | 100 |

**रेखाचित्र कमांक– 4.4**
**योग्य प्रशिक्षक उपलब्ध**

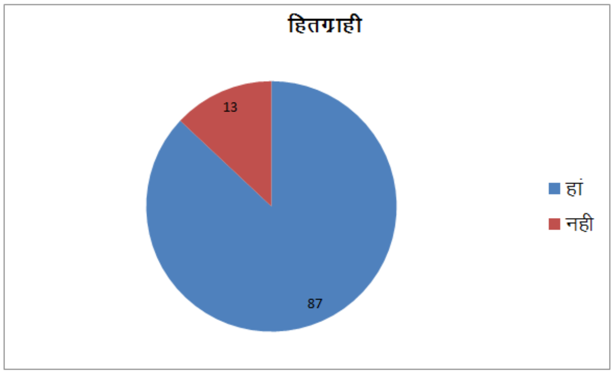

**विवेचना –**

उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ के अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 100 हितग्राही मे से 87 प्रतिशत हितग्राहियों ने कहा कि यहां योग्य प्रशिक्षक उपलब्ध है एवं 13 प्रतिशत हितग्राहियों ने कहा कि यहां योग्य प्रशिक्षक उपलब्ध नही है। अतः इस शिक्षण संस्थान मे योग्य प्रशिक्षक उपलब्ध है।

### 5. इस संस्था मे आपके रोजगार हेतु प्रशिक्षण प्राप्त हुआ।

**सारणी क्र. –4.5**
**प्राप्त रोजगार**

| हितग्राही | हां | नही | कुल |
|---|---|---|---|
| 100 | 92 | 8 | 100 |

**रेखाचित्र कमांक–4.5**
**प्राप्त रोजगार**

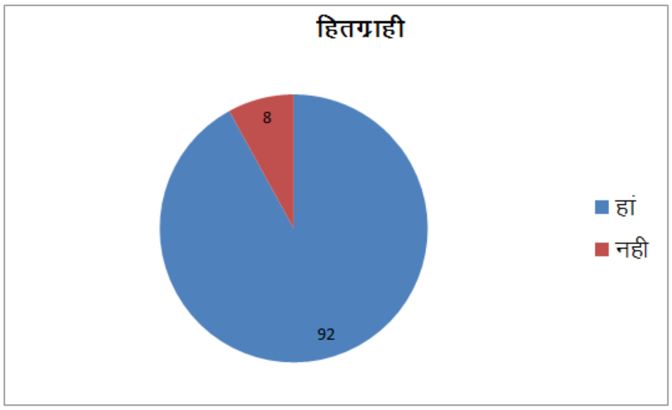


**विवेचना –**

उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ के अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 100 हितग्राही मे से 92 प्रतिशत लोगो ने अपने रोजगार के लिए संस्था मे प्रशिक्षण प्राप्त किया जबकि 8 प्रतिशत लोगो ने अपने रोजगार हेतु संस्था मे प्रशिक्षण प्राप्त नही किया। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि रोजगार के लिए संस्था मे अधिकांशतः लोगो ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

### 6 प्रशिक्षणोपरान्त आपको स्वरोजगार की प्राप्ति हुई।

**सारणी क्र. – 4.6**
**स्वरोजगार की प्राप्ति**

| हितग्राही | हां | नही | कुल |
|---|---|---|---|
| **100** | **65** | **35** | **100** |

रेखाचित्र कमांक–4.6
स्वरोजगार की प्राप्ति

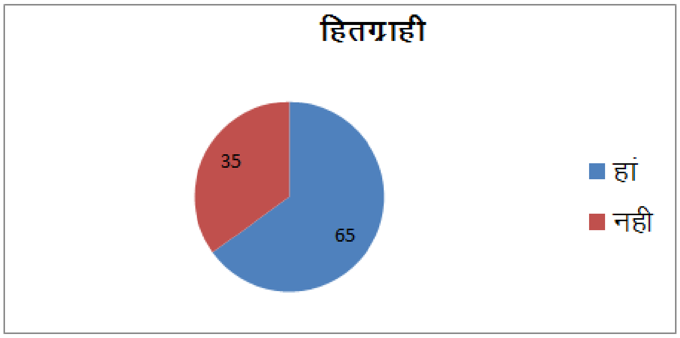


विवेचना –

उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ के अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 100 हितग्राही मे से 65 प्रतिशत हितग्राहियों को स्वरोजगार की प्राप्ति हुई जबकि 35 प्रतिशत लोगो को स्वरोजगार की प्राप्ति नही हुई। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि संस्थान मे प्रशिक्षणोपरान्त अधिकांशतः हितग्राहियो ने स्वरोजगार प्राप्त किया।

### 7. इस संस्था के प्रशिक्षण के द्वारा श्रमशीलता की क्षमता का विकास हुआ।

सारणी क्र. –4.7
हितग्राहियों में श्रमशीलता का विकास

| हितग्राही | हां | नही | कुल |
|---|---|---|---|
| 100 | 96 | 4 | 100 |

रेखाचित्र कमांक–4.7
हितग्राहियों में श्रमशीलता का विकास

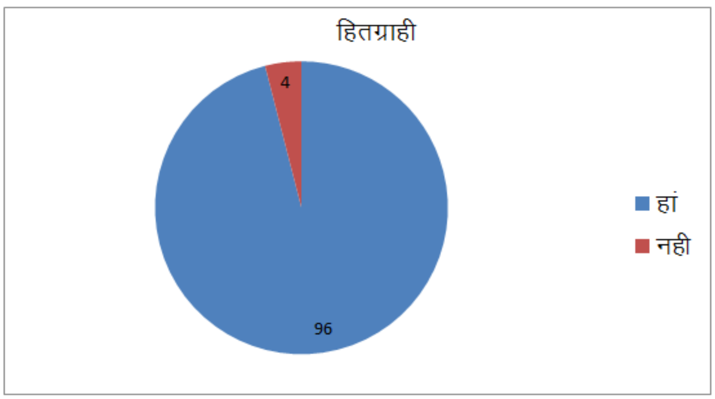


विवेचना –

उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ के अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 100 हितग्राही मे से 96 प्रतिशत हितग्राहियों ने माना कि संस्था मे प्रशिक्षण के द्वारा उनके श्रमशीलता की क्षमता मे विकास हुआ जबकि 4 प्रतिशत हितग्राहियों ने कहा कि उनके श्रमशीलता की क्षमता मे विकास नही के बराबर हुआ। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि संस्थान ने हितग्राहियों की श्रमशीलता की क्षमता के विकास मे समुचित वृद्धि की है।

## 8. इस संस्थान मे महिलाओ को अलग से सुविधा दी जाती है

सारणी क्र. – 4.8
महिलाओ को प्राप्त सुविधा

| हितग्राही | हां | नही | कुल |
|---|---|---|---|
| 100 | 92 | 8 | 100 |

रेखाचित्र कमांक–4.8
महिलाओ को प्राप्त सुविधा

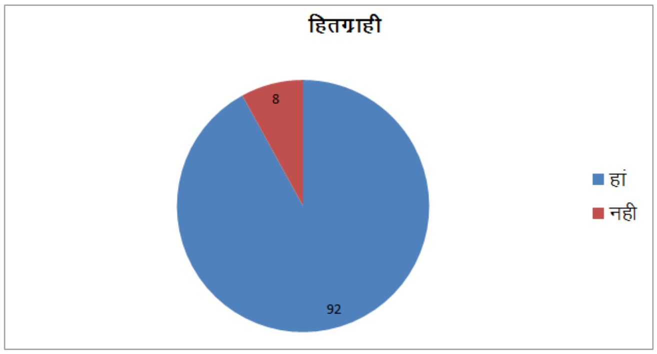


**विवेचना –**

उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ के अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 100 हितग्राही मे से 92 प्रतिशत हितग्राहियों ने माना कि संस्था मे महिलाओ को अलग से सुविधा दी जाती है जबकि 8 प्रतिशत हितग्राहियों ने कहा कि महिलाओ को अलग से सुविधा नही दी जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि संस्थान मे महिला हितग्राहियों की विशेष सुविधा प्राप्त है।

## 9. संस्था मे कर्मचारी एवं अधिकारी का आपके प्रति कैसा रवैया था।

सारणी क्र. –4.9
संस्था के कर्मचारी एवं अधिकारी व्यवहार

| हितग्राही | सहयोगात्मक | असहयोगात्मक | कुल |
|---|---|---|---|
| 100 | 95 | 5 | 100 |

रेखाचित्र कमांक–4.9
संस्था के कर्मचारी एवं अधिकारी व्यवहार

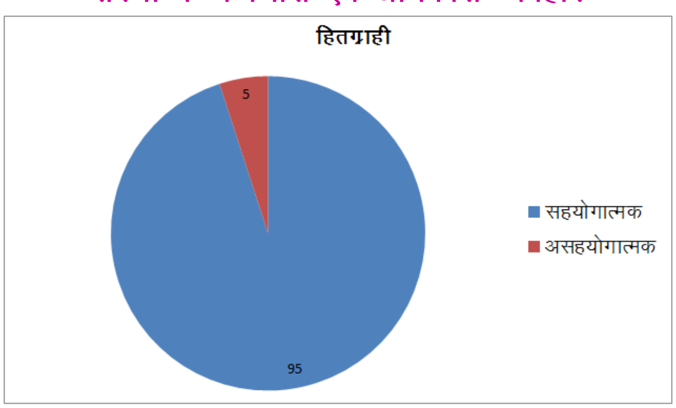

विवेचना –

उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ के अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 100 हितग्राही मे से 95 प्रतिशत हितग्राहियों ने माना कि संस्था के कर्मचारी एवं अधिकारी का व्यवहार सहयोगात्मक था जबकि 5 प्रतिशत हितग्राहियों ने कहा कि संस्था के कर्मचारी एवं अधिकारी का व्यवहार अपेक्षानुरूप सहयोगात्मक नही था। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि संस्थान के कर्मचारी एवं अधिकारी का व्यवहार हितग्राहियों के प्रति सहयोगात्मक रहा।

## 10. इस प्रशिक्षण से आपको लाभ प्राप्त हुआ।

सारणी क्र. –4.10
प्रशिक्षण से लाभ प्राप्ति

| हितग्राही | हां | नही | कुल |
|---|---|---|---|
| 100 | 92 | 8 | 100 |

रेखाचित्र कमांक–4.10
प्रशिक्षण से लाभ प्राप्ति

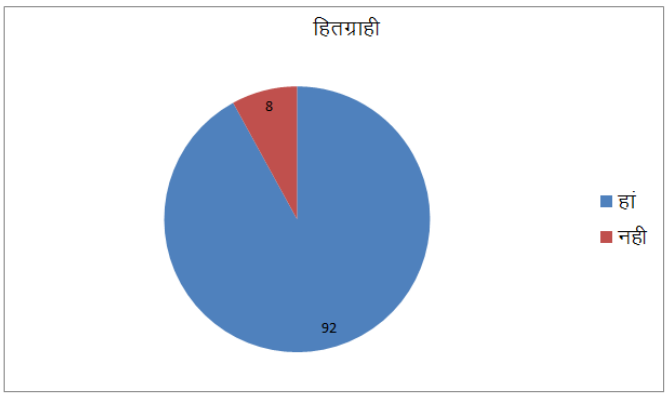


विवेचना –

उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ के अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 100 हितग्राही मे से 95 प्रतिशत हितग्राहियों को लाभ प्राप्त हुआ जबकि 5 प्रतिशत हितग्राहियो को लाभ प्राप्त नही हुआ। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि संस्थान से हितग्राहियों को बहुत ही फायदा हुआ है।

## 11. स्वरोजगार स्थापित करने के लिए पूंजी कहां से प्राप्त है।

सारणी क्र. – 4.11
पूंजी के स्त्रोत

| हितग्राही | स्वयं की पूंजी | बैंक द्वारा प्राप्त ऋण | कुल |
|---|---|---|---|
| 100 | 15 | 85 | 100 |

रेखाचित्र कमांक–4.11
पूंजी के स्त्रोत

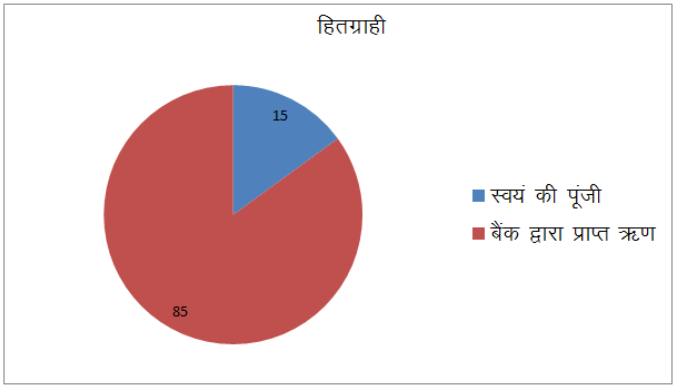


**विवेचना –**

उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ के अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 100 हितग्राही मे से 15 प्रतिशत हितग्राहियों ने स्वयं की पूंजी से स्वरोजगार स्थापित किया जबकि 85 प्रतिशत हितग्राहियों ने बैंक द्वारा ऋण प्राप्त कर स्वरोजगार स्थापित किया।

## 12.बैंक से आपको आसानी से ऋण की प्राप्ति हुई।

सारणी क्र. – 4.12
बैंक से ऋण प्राप्ति

| हितग्राही | हां | नही | कुल |
|---|---|---|---|
| 100 | 92 | 8 | 100 |

रेखाचित्र कमांक–4.12
बैंक से ऋण प्राप्ति

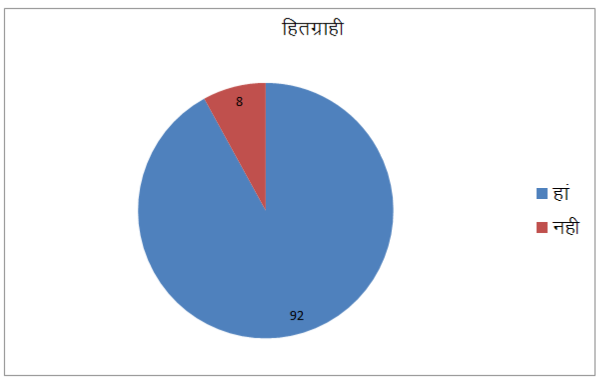


**विवेचना –**

उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ के अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 100 हितग्राही मे से 85 प्रतिशत हितग्राहियों ने स्वयं की पूंजी से स्वरोजगार स्थापित किया जबकि 15 प्रतिशत हितग्राहियों ने बैंक द्वारा ऋण प्राप्त कर स्वरोजगार स्थापित किया।

### 13. बैंक के कर्मचारियों एवं अधिकारियों का आपके प्रति कैसा रवैया था।

सारणी क्र – 4.13
बैंक के कर्मचारियों एवं अधिकारियों का व्यवहार

| हितग्राही | सहयोगात्मक | असहयोगात्मक | कुल |
|---|---|---|---|
| 100 | 55 | 45 | 100 |

रेखाचित्र कमांक– 4.13
बैंक के कर्मचारियों एवं अधिकारियों का व्यवहार

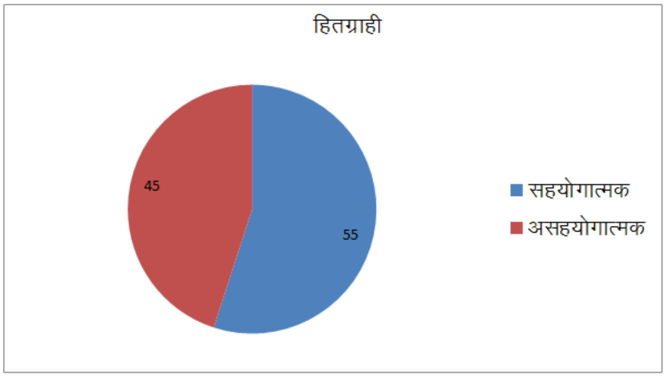


### विवेचना –

उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ के अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 100 हितग्राही मे से 55 प्रतिशत हितग्राहियों ने माना कि बैंक के कर्मचारी एवं अधिकारी का व्यवहार सहयोगात्मक था जबकि 45 प्रतिशत हितग्राहियों ने कहा कि बैंक के कर्मचारी एवं अधिकारी का व्यवहार अपेक्षानुरूप सहयोगात्मक नही था। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि बैंक के कर्मचारी एवं अधिकारी का व्यवहार हितग्राहियों के प्रति सहयोगात्मक रहा।

### निष्कर्ष –

किसी की अध्ययन का निष्कर्ष निकालना अत्यंत आवश्यक है इसके द्वारा ही यह पता चलता है कि अध्ययन का उद्धेश्यपूर्ण हुआ चलता है या नहीं प्रस्तुत अध्ययन में यह देखा गया कि कोरबा ग्रामीण प्रधान जिला है जहाँ अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास कर रही एवं यहाँ रोजगार की कमी के कारण वे शहरों की ओर पलापन कर रहे है या दूसरे राज्यों में काम की तलाश में चले जा रहे है परंतु केन्द्र सरकार की योजना ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण स्थापना पश्चात युवाओं का ओर पलायन में कमी आई है। इस संस्था के माध्यम से ग्रामीण युवा जो अपने कौशल में विकास करना चाह रहे थे या जो अपना स्वंय के रोजगार की स्थापना करना चाह रहे थे वे युवा एवं युवति यहां अनेक प्रशिक्षक कार्यक्रम के माध्यम से अपने कौशल में बढ़ोत्तरी कर रहे है। जो युवा जिस क्षेत्र मे रूची रखता है उसे उस क्षेत्र की बारीकियों से अवगत कराया जा रहा है यहाँ प्रशिक्षण प्रशिक्षित प्रशिक्षको द्वारा कराया जाता है साथ ही उनके व्यक्तित्व के विकास के लिये अनेक कार्यक्रम भी कराए जाते है। प्रशिक्षण के उपरान्त उन्हें बैंक द्वारा ऋण भी उपलब्ध कराने मे संस्था का योगदान रहता है जिससे उन्हें कोई सुविधा ना हो इस प्रकार यह संस्था स्वरोजगार एवं कौशल विकास के लिए लाभदायक रहा है।

### अध्ययन का महत्व –

भारत की जनसंख्या का एक बड़ा प्रतिशत गांवो मे निवास करता है जहां गरीबी और अशिक्षा का दर ऊंचा है। ऐसे मे ग्रामीण बेरोजगार युवा शहरो की ओर पलायन करने लगते हैं। सरकार द्वारा समय समय पर उनके विकास के लिए अनेक कार्यक्रम चलाए जाते है, परन्तु सही सूचना एवं जागरूकता के अभाव के कारण वे युवा इस कार्यक्रम से वंचित रह जाते है। इस सुविधा को सही तरीके से उपयोग नही कर पाते। छत्तीसगढ़ के ग्रामीण परिवेश मे रहने वाले नागरिक अशिक्षित होने के कारण सुविधा का लाभ नही ले पाते।

- आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वे शहरो मे पलायन कर जाते है।
- अशिक्षा के कारण सभी सरकारी कार्यक्रम व्यर्थ लगता है।
- सरकारी कार्यक्रमों को लेकर उनके मन मे जागरूकता की कमी पाई गई है।
- महिलाए घर से बाहर रहने मे हिचकिचाहट महसूस करती है।

इस शोध के माध्यम से अध्ययन करना चाहते है कि इनकी समस्या और समाधान क्या है ताकि स्वरोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रम की ओर जागरूक होकर स्वरोजगार मे वृद्धि कर सके।

## संदर्भ ग्रंथ सूची –


- अरविल वी एडम्स (2007) द ट्रांजिशन आफ यूथ स्कील्स डवलपमेन्ट्स इन द ट्रांजिशन टू वर्क ''ए ग्लोबल रिव्यू'' पुर्ननिर्माण और विकास के लिये विश्व बैंक/बैंक।
- अखौरी एम.एम.पी (1977) ''असंतुलन के कारण असंतुलित संतुलन एंटरप्रेन्योरियल डेवलपमेन्ट के ज्ञात कारक''में प्रस्तुत कागज प्रोद्योगिकी और उद्यमी पर कार्यशाला, कुआलालपुंर pp.25-30
- आषीश वंदी (1973)''उद्यमी संस्कृति और उद्यमी पुरूष'' आर्थिक और उद्यमी पुरूष'' आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, Vol.Vlll. No-47 कलकत्ता , pp.98-106
- ईष्वर दयाह नंबूदिरी, सीएन एस, बलदर आर, शर्मा तरूण सेठ राव, सीपी, कुच्छल, एस सी यालापडे, एस पी, जयकुमार (1973) रिपोर्ट'' प्रबुंधन में अनुसंधान का सर्वेक्षण '' Vol.ll.P.17
- उदय कुमार एम. ए. उद्यमिता विकास कार्यक्रम और उद्यमियो का विकास लघु उद्यम विकास प्रबंधन और विस्तार 2002; 29 (4):87–96
- ओमेन एम ए (1972) ''भारतीय आर्थिक विकास में लधु उद्योगः उद्योग ए केरल का केस स्टडी'' त्रिवेन्द्रम एस बी प्रेस PP.71-188
- ओकाडा ए 2012 भारत मे युवाओं के लिये कौशल विकास : चुनौती और अवसर ''CICE'' हिरोशिमा विश्वविद्यालय शिक्षा मे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग Vol 15 No 2 PP 169-193
- ग्रामीण स्वरोजगार प्रषिक्षण संस्थानो GUID (RSETI) के लिये दिषा निर्देष भारत सरकार ग्रामीण विकास विभाग (एसजीएसवाई – डिविजन कृषि भवन, नई दिल्ली)
- गिलादबी एवं लेविन.डी (1986) ''ए बिहेवियर मॉडल ऑफ एंटरप्रेन्योरियल सप्लाई ''जर्नल ऑफ स्यॉल बिजनेस मैनेजमेंट, (1976)'' .24 नवम्बर 4, पी,पी 45–541
- बर्जर बी (1992)''द कल्चर ऑफ एटरप्रेन्योरशिप''टाटा मैकग्रा, हिल, नई दिल्ली पृश्ठ. 25
- भाटिया बी एस (1976)''न्यूइंडस्ट्रियल एंटरप्रेन्योरः इन ओरिजिन एड समस्या '' जर्नल आफ जनरल मैनेलमेंट , Vol.II. No 1 अगस्त pp. 69-79
- मानुसो एक 1974''द एंटर प्रेन्योर्स क्विज'' मंचू (एड) में एटरप्रेन्योर की हैड बुक डेडहम एम ए आर्टेक हाउस इंक Vol.2, pp.239
- मधुलिका कौशिक (1994) इम्पेक्ट ऑफ बैंक क्रेडिट वीकर करके में धारा, भारतीय स्टेट बैंक मासिक, voI.xxxvI नं. 19 सितम्बर, पृष्ठ. 27
- रामदोराई एस 2014 – कौशल विकास के माध्यम से युवा सशक्तिकरण (वृद्धि अद्यतन : मार्च 2014 – अक्टूबर 2014)
- रतन वीडब्ल्यू (1983) आर्थिक समीक्षा पत्रिका सिंडिकेर बैंक, वाल्यूम 22 No 8 मार्च pp.2-7

गजाला रशीद
शोधार्थी, वाणिज्य विभाग, आई. एस. बी. एम. विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)